भारतीय ज्ञान धरोहर
विमर्श और परंपरा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परम्परा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

मो. 9660111549

संस्करण :

प्रथम 2023

ISBN : **978 - 81 - 89435 - 69 - 1**

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान धरोहर : विमर्श और परम्परा

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

10

वेदों में ऋषिकाएँ

आराधना माहेश्वरी
सहायक आचार्य (समाज विज्ञान विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

वेदकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों को उच्च ज्ञान, स्वतंत्र विचार और धार्मिक अधिकारों में पुरुषों के समान ही स्थान प्राप्त था। इसका प्रमाण वेदों में वर्णित अनेक ऋषिकाएँ हैं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर मंत्रों की रचना की। लगभग तीस-चालीस ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मंत्र उपलब्ध हैं, जिनमें लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्वधारा, उर्वशी, रोमशा, सिकता, निवावरी आदि प्रमुख हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि स्त्रियों को न केवल उपनयन संस्कार बल्कि उच्चस्तरीय वैदिक शिक्षा, तप, दर्शन और मंत्र-दृष्टि का अधिकार समान रूप से प्राप्त था।

वेदों में यह भी निर्देश है कि विदुषी कन्या का विवाह विद्वान पुरुष से ही किया जाए, और विवाह से पूर्व कन्या का शिक्षित होना अनिवार्य माना गया। यजुर्वेद में ब्रह्मचर्यावस्था पूर्ण करने के बाद ही विवाह का संकेत है, जबकि अथर्ववेद शिक्षित, संयमी और संस्कारित स्त्री को जीवन-सफलता की आधारशिला मानता है।

चूँकि वेदकाल में यज्ञ और वैदिक अनुष्ठान अत्यंत महत्वपूर्ण थे, और पति-पत्नी दोनों की संयुक्त सहभागिता से ही यज्ञ पूर्ण होता था, इसलिए स्त्री का विद्वान, आचारवान और आध्यात्मिक रूप से जागृत होना समाज की अनिवार्य आवश्यकता थी।

अतः समग्र रूप से देखा जाए तो वेदकालीन समाज में स्त्री ज्ञान, शिक्षा, आध्यात्मिकता, साहित्य-सृजन और सामाजिक सम्मान-सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समकक्ष थी तथा वैदिक संस्कृति में उसका योगदान अत्यंत उच्च और प्रतिष्ठित था।

ऋग्वेदीय भारत में स्त्री न केवल शिक्षित थी बल्कि आध्यात्मिक, वैदिक और सामाजिक क्षेत्रों में पुरुषों के समान अधिकार और प्रतिष्ठा रखती थी। वे यज्ञों और संस्कारों में पति के साथ समान रूप से भाग लेती थी और आवश्यकता पड़ने पर पौरोहित्य-कर्म भी कर सकती थी। वेदों में वर्णित ऋषिकाओं से स्पष्ट है कि स्त्रियाँ न केवल मंत्र-द्रष्टा थी बल्कि वेदाध्ययन, तप और ज्ञान-साधना के उच्चत्तम स्तर

तक पहुँचती थी।

वैदिक काल में स्त्रियाँ शिक्षा-संरचना का भी महत्वपूर्ण भाग थी। संस्कृत व्याकरण की प्रचलित परंपरा बताती है कि महिलाएँ गुरुकुल चलाती थी—गुरुकुल चलाने वाली महिला 'आचार्य', पढ़ाने वाली 'उपाध्याय', आचार्य की पत्नी 'आचार्यानी' तथा उपाध्याय की पत्नी 'उपाध्यायनी' कहलाती थी। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा-व्यवस्था में स्त्री का स्थान सक्रिय, उत्तरदायी और सम्मानित था।

ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ वेद पढ़ती थी, कविताएँ बनाती थी और मनन-चिंतन द्वारा ऋषित्व प्राप्त कर मंत्रों का साक्षात्कार करती थी। ऋग्वेद में घोषा, अपाला, रोमशा, विश्ववारा, इन्द्राणी, शची, लोपामुद्रा, तथा सूर्या जैसी विदुषी स्त्रियों ने सूक्तों का दर्शन किया। घोषा के सूक्त (दशम मंडल 39-40), रोमशा (ऋ. 1/27/7), विश्ववारा (5/28), इन्द्राणी (10/45), शची (10/159) और अपाला (9/59) इसके प्रमाण हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद के अनेक सूक्तों की ऋषिका सूर्या हैं, और लोपामुद्रा ने अपने पति अगस्त्य के साथ सूक्त का दर्शन किया था।

वेदों में शिक्षा का समान अधिकार भी प्रतिपादित है। यजुर्वेद (26/2) सबको धर्मशास्त्र और विद्या के अध्ययन का अधिकार देता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती भी यजुर्वेद 7/33 के भावार्थ में स्पष्ट लिखते हैं कि विद्वान पुरुष और विदुषी स्त्रियाँ सभी बालकों और बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करें और राज्य व समाज उनकी आजीविका सुनिश्चित करें।

अर्थात, वैदिक युग में स्त्री बौद्धिकता, आध्यात्मिक शक्ति, मुक्त चिंतन और वेदमंत्रों के साक्षात्कार में पुरुषों की समकक्ष थी। शौनक के 'वृहद्देवता' में कई ब्रह्मवादिनी स्त्रियों की सूची मिलती है, जो इस तथ्य को और प्रमाणिक बनाती है कि ऋषिकाएँ वैदिक संस्कृति के ज्ञान-भण्डार और अध्यात्म-परंपरा की अभिन्न संवाहक थी।

वेदों में स्त्री-शिक्षा को अत्यंत महत्व दिया गया है। विद्या और वाणी की दात्री देवी सरस्वती स्वयं स्त्री-शक्ति का प्रतीक मानी गई। इसी परंपरा में वेदों में तैंतीस के लगभग ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है—जिनमें सरस्वती, घोषा, अपाला, सर्पराज्ञी, सूर्या, सावित्री और अदिति दाक्षायणी प्रमुख हैं। ये सभी स्त्रियाँ वेदमंत्रों की दृष्टा थी और उनके मंत्र यह सिद्ध करते हैं कि वे पूर्णतः शिक्षित, स्वतंत्र विचार वाली और आध्यात्मिक साधना में निपुण थी।

प्रमुख ऋषिकाएँ निम्नलिखित हैं-

रोमेशा ब्रह्मचारिणी

रोमेशा ब्रह्मचारिणी को प्रथम ऋषिका माना जाता है। वे आजीवन ब्रह्मचारिणी

रहीं और वेदाध्ययन व अध्यापन में ही जीवन लगाया। ऋग्वेद मंडल 1, सूक्त 176, मंत्र 7 उनकी दृष्टि का है, जिसमें वे अपने गुणों और क्षमता को सम्मानपूर्वक स्वीकारने की प्रेरणा देती हैं। रोमेशा कहती हैं कि उनके कार्यों को तुच्छ न समझा जाए, क्योंकि वे गंधारी स्त्रियों की भाँति समर्थ, रक्षक और प्रशंसनीय हैं।

लोपामुद्रा ऋषिका

लोपामुद्रा ऋषिका का व्यक्तित्व वैदिक काल की स्त्री-विद्वत्ता और आध्यात्मिक चेतना का अत्यंत उज्ज्वल उदाहरण है। वे महर्षि अगस्त्य की पत्नी थी और विदर्भ देश के राजा की पुत्री होने के कारण प्रारम्भ से ही श्रेष्ठ शिक्षा, संस्कार और अध्यात्म की ओर उनका स्वाभाविक झुकाव था। उन्हें योग्य आचार्याओं एवं उपाध्यायिनियों से वैदिक विद्या प्राप्त हुई। वे ब्रह्मचर्य के महत्व, शिक्षा की अनिवार्यता और चरित्र की पवित्रता को भली-भाँति समझती थी।

ऋग्वेद में लोपामुद्रा का उल्लेख विशेष आदर के साथ हुआ है। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 179वें सूक्त में वे और उनके पति अगस्त्य, दोनों ही मंत्रों के दृष्टा माने गए हैं। इस सूक्त में स्त्री के नैतिक कर्त्तव्यों, गृहस्थ जीवन की मर्यादाओं, आत्मानुशासन, तथा शरीर-मन को सुड़ौल, दृढ़ और संयत रखने की शिक्षा दी गई है। सूक्त के चौथे मंत्र में 'लोपामुद्रा' शब्द आया है, जिसका अर्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'कामभावना से रहित पवित्र कन्या' किया है, जो उनके व्यक्तित्व की साध्वी और तपस्विनी छवि को प्रकट करता है।

अगस्त्य और लोपामुद्रा द्वारा संयुक्त रूप से रचित यह सूक्त यह बताता है कि वैदिक युग में पति-पत्नी दोनों ही आध्यात्मिक साधना और वेद-चिंतन में समान रूप से सहभागी थे। ऋग्वेद के अतिरिक्त लोपामुद्रा का उल्लेख यजुर्वेद (अध्याय 17, मंत्र 11-15) में भी मिलता है, जहाँ वे गृहस्थ जीवन की स्थिरता, दाम्पत्य की एकनिष्ठता और परिवार की मंगलभावना की शिक्षा देती हैं। वे कहती हैं कि पति-पत्नी को गृहस्थाश्रम में परस्पर स्नेह और सहकार से रहना चाहिए, दीर्घायु भोगनी चाहिए और पुत्र-पौत्रों के साथ जीवन के पूर्ण सुख का अनुभव करना चाहिए।

लोपामुद्रा की समकालीन अन्य ऋषिकाओं—जैसे अपाला, विश्ववारा, सूर्या, इन्द्राणी और जूहू का भी वेदों में उल्लेख है। अपाला अत्रि की पुत्री थी और ऋग्वेद के 8/90 सूक्त की दृष्टा। इन्द्राणी ऋग्वेद के दशम मंडल के 86वें सूक्त के अनेक मंत्रों की ऋषिका हैं, जबकि जूहू 10/109 सूक्त की कत्री और प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी थी।

इन उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि वेदकालीन समाज में स्त्रियाँ बाल्यावस्था से

ही शिक्षा, संयम और कौशल में प्रशिक्षित होती थी। ब्रह्मचर्य पूर्ण करने के पश्चात वे विवाह करती, पति की समुचित सेवा, गृहस्थ-धर्म का पालन और श्रेष्ठ संतानों का जन्म देकर समाज को उन्नत बनाती। वेद यह भी निर्देश देता है कि पढ़ाई समाप्त होने पर वही विवाह उचित है जिसमें स्त्री-पुरुष गुण, स्वभाव और चरित्र में समानता रखें; क्योंकि समान प्रकृति वाले दंपत्ति ही सफल और सुखी जीवन का आधार बनते हैं।

इस प्रकार लोपामुद्रा ऋषिका वेदकाल की उस गौरवशाली स्त्री-परंपरा का स्वरूप हैं, जहाँ स्त्री विद्या, तप, ब्रह्मचर्य, दाम्पत्य और समाज-धर्म—सभी में पुरुष के समान ही प्रतिष्ठित और आदरणीय थी।

विश्ववारा

महर्षि अत्रि के कुल में जन्मी विश्ववारा आत्रेयी वेदविदुषी, ब्रह्मवादिनी और प्रखर चिंतक थी। वेदाध्ययन में उनकी दक्षता इतनी उच्च थी कि उनका ऋग्वेद और यजुर्वेद दोनों पर समान अधिकार माना जाता है। वे ऋग्वेद मण्डल 5, सूक्त 28 की दृष्टा मानी जाती हैं, जिसमें कुल छह ऋचाएँ हैं।

इस सूक्त की पहली ऋचा में वे सूर्य के स्वरूप का अत्यंत वैज्ञानिक और तात्त्विक वर्णन करती हैं। उनके अनुसार सूर्य अनेक तत्वों से बना है और उसका प्रकाश तथा ताप विद्युत-ऊर्जा पर आधारित है। सूर्य ही दिन-रात्रि के क्रम, दिशाओं के ज्ञान, तथा सृष्टि के नियमन का मूल कारण है। उनके इस विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वह केवल दार्शनिक ही नहीं, बल्कि नभ-विज्ञान की भी विदुषी थी।

इसके साथ ही, उन्होंने ऋषि परम्परा में उच्च स्थान रखने वाली ऋषिकाओं की श्रेणी को और मजबूत किया। इसी कड़ी में दीर्घतमा ऋषि की माता 'ममता' का भी उल्लेख मिलता है, जिन्होंने ऋग्वेद के मण्डल 10, सूक्त 10 की रचना की थी।

सुदीति पुरूमीडहा ऋषिका

सुदीति पुरूमीडहा वैदिक परम्परा की एक प्रतिष्ठित ऋषिका हैं, जिन्हें ऋग्वेद मण्डल 8, सूक्त 71 तथा सामवेद पूर्वार्चिक, अध्याय 1, प्रथम दशति, मंत्र 6 की दृष्टा माना गया है।

ऋग्वेद के इस सूक्त में कुल पन्द्रह ऋचाएँ हैं, जिनमें वे अग्नि-स्वरूप परमात्मा की महिमा, उसकी ऊर्जा, उसकी प्रकाश-वित्तरण शक्ति तथा मानव जीवन में उसकी उपादेयता का सुंदर वर्णन करती हैं। सुदीति ने अग्नि को सृष्टि का प्रेरक, ज्ञान का प्रकाशक और यज्ञों का मुख्य प्रेरणास्त्रोत बताकर दैवी शक्ति और मानवीय जीवन के संबंध को अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया है।

कुरूसुति : काण्व ऋषिका

कुरूसुति काण्व कण्व-वंशीय विदुषी ऋषिका थी, जिनका स्थान ऋग्वैदिक परम्परा में अत्यन्त सम्मानजनक है। वे ऋग्वेद मण्डल 8 के सूक्त 76 और 77 की दृष्टा मानी जाती हैं। सूक्त 76 में कुल 12 ऋचाएँ और सूक्त 77 में 11 ऋचाएँ हैं, जिनमें उनके आध्यात्मिक, नैतिक और साधनात्मक विचार प्रकट होते हैं।

सूक्त 76 में उन्होंने मनुष्य को जितेन्द्रिय बनने की प्रेरणा दी है—अर्थात् इन्द्रियों पर संयम रखकर जीवन को उच्च आदर्शों की ओर ले जाने की सलाह। वे विषय-वासनाओं से दूर रहकर मन को निर्मल और उदात्त बनाए रखने की बात कहती हैं। उनके अनुसार मनुष्य का वास्तविक बल उसके संयम, दृढ़ता और सदाचरण में निहित है।

कुसीदि ऋषिका

कुसीदि ऋषिका काण्व-वंशीय विदुषी थी, जिनका वैदिक साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। उनका कार्य केवल ऋग्वेद तक सीमित नहीं, बल्कि यजुर्वेद और सामवेद तक फैला हुआ है—जो उनकी व्यापक विद्वत्ता और गहन अध्ययन का प्रमाण है।

ऋग्वेद में वे मण्डल 8 के सूक्त 81, 82 और 83 की दृष्टा हैं। सूक्त 81 की 9 ऋचाओं में उन्होंने ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और प्रकृति के विविध पदार्थों के उचित उपयोग का उल्लेख किया है। इनमें कई स्थानों पर सुंदर और गूढ़ आलंकारिक वर्णन भी मिलता है, जो उनकी काव्य-प्रतिभा को दर्शाता है।

सामवेद में भी उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने मंत्र 138, 167, 728 और 730 पर कार्य किया है। ये सभी मंत्र मूल रूप से ऋग्वेद मण्डल 8 के उन्हीं सूक्तों से लिए गए हैं जिनकी वे दृष्टा हैं, जैसे—8.81.1, 8.83.1 आदि। इससे सिद्ध होता है कि उनके रचित वैदिक मंत्र सामवेद में भी समान रूप से प्रतिष्ठित हुए।

शाश्वती ऋषिका

शाश्वती ऋषिका आंगिरस परंपरा से संबंधित मानी जाती हैं, किन्तु उनका कार्य मुख्यत: ऋग्वेद मण्डल 8 में मिलता है, जो काण्व वंश को समर्पित है। इस आधार पर यह प्रतीत होता है कि उनका जन्म कण्व-परिवार में हुआ होगा, परन्तु उनकी विद्या परंपरा आंगिरसों से जुड़ी रही होगी। वे ऋचा 34 (सूक्त 1, मण्डल 8) की दृष्टा हैं।

इस ऋचा में उन्होंने परमात्मा और सृष्टि-तत्त्वों का अत्यंत गम्भीर दार्शनिक विवेचन प्रस्तुत किया है। यहाँ पाँच प्रकार की सत्ताओं का उल्लेख मिलता है—

1.कूटस्थ नित्य (जैसे ब्रह्म)
2.नित्य (जैसे प्रकृति और जीव)
3.अनित्य (कार्य रूप ब्रह्माण्ड)
4.मिथ्या (प्रतिभासिक वस्तुएँ जैसे रज्जु में सर्प)
5.तुच्छ (अस्तित्वहीन कल्पनाएँ जैसे शश-शृंग)

इस ऋचा में ब्रह्माण्ड को 'अनस्थ' कहा गया है। 'अनस्थ' का अर्थ है— जो सर्वकाल में स्थिर न रहे, अर्थात् परिणामी नित्य, जो परिवर्तित होता रहता है। सृष्टि अनित्य है, परंतु ईश्वर की विभूति होने और जीवों के कर्म-भोग का आधार बनने से उसका महत्त्व बना रहता है।

शाश्वती ऋषिका का यह मंत्र बताता है कि वे केवल धार्मिक भावना ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि की तत्त्वमीमांसा और दर्शन-चिंतन में भी पारंगत थी। उनकी दृष्टि में ईश्वर सम्पूर्ण जगत् का स्वामी, धारक और पालनकर्ता है, तथा सभी भोग्य पदार्थ उसी की व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं। उनका यह वैदिक योगदान स्त्री-विद्वत्ता की उस उज्ज्वल परंपरा को सिद्ध करता है जिसने वेद-मीमांसा, दर्शन और आध्यात्म के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान बनाया।

अपाला आत्रेयी ऋषिका

अपाला आत्रेयी अत्रि-वंश की प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी तथा ऋग्वेद मण्डल 8, सूक्त 91 की ऋषिका थी। उनके द्वारा दृष्ट मंत्र बताते हैं कि यदि कोई ब्रह्मचारिणी कन्या वेदाध्ययन के दौरान अस्वस्थ हो जाए तो उसे सोमलता जैसी औषधियों से अपने स्वास्थ्य को ठीक करना चाहिए।

अपाला का मत था कि पहले स्वास्थ्य, फिर शिक्षा और उसके बाद ही विवाह होना चाहिए। वेदाध्ययन अधूरा छोड़कर या अस्वस्थ अवस्था में विवाह करना उचित नहीं। उनकी ऋचाएँ स्त्री-स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्त जीवन के महत्व को स्पष्ट रूप से प्रकट करती हैं, जिससे वे वैदिक काल की प्रगतिशील और विचारशील ऋषिका के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं।

रेणु विश्वामित्र ऋषिका

रेणु महर्षि विश्वामित्र के वंश से संबंध रखने वाली एक प्रख्यात वैदिक ऋषिका थी। विश्वामित्र स्वयं वैज्ञानिक दृष्टि वाले ऋषि थे, और उसी प्रवृत्ति को रेणु ने भी आगे बढ़ाया। वह ऋग्वेद मण्डल 9, सूक्त 70 की द्रष्टा हैं। इस सूक्त की पहली ऋचा सृष्टि-उत्पत्ति पर विचार प्रस्तुत करती है, जिससे स्पष्ट होता है कि रेणु का ज्ञान वस्तुतः वैज्ञानिक और दार्शनिक दोनों ही स्तरों पर गहरा था।

सिक्ता निवावरी ऋषिका

सिक्ता निवावरी, ऋग्वेद मण्डल 9, सूक्त 86 की ऋचा 11 से 20 तक की द्रष्टा हैं। उनकी ऋचाओं में ईश्वर-उपासना, कर्मफल, स्वर्ग, सदाचार और कर्मयोग का आध्यात्मिक विवेचन मिलता है। उनके मंत्र दर्शाते हैं कि वे धर्म, नैतिकता और मनुष्य के कर्ममार्ग की गहरी जानकार थी।

कृतयशा ऋषिका

कृतयशा, ऋग्वेद मण्डल 9, सूक्त 108 की ऋचा 10 और 11 की द्रष्टा हैं। इन ऋचाओं में उन्होंने यह बताया कि परमात्मा सत्कर्मी व्यक्ति को सक्रिय, समर्थ और गतिशील बनाता है, जिससे वह ईश्वर के समीपत्व को प्राप्त कर सके। कृतयशा का दृष्टिकोण सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरक है।

यमी वैवस्वती ऋषिका

यमी वैवस्वती ऋग्वेद मण्डल 10, सूक्त 10 की कई ऋचाओं की द्रष्टा हैं— विशेषकर मंत्र 1, 3, 5, 6, 7, 11 और 13। यह संपूर्ण सूक्त यमी और यम के संवाद पर आधारित है, जो वैदिक संवाद परंपरा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। उनकी भूमिका दर्शाती है कि वे संवाद, तर्क और नीतिकथन में निपुण थी।

घोषा काक्षीवती ऋषिका

घोषा काक्षीवती, ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 39 और 40 की दृष्टा हैं। वे काक्षीवान की पुत्री होने के कारण 'काक्षीवती' कहलाती हैं। बृहद्देवता के अनुसार वे लंबे समय तक अस्वस्थ रहीं और इसी कारण अविवाहित भी रहीं। बाद में उन्होंने अश्विन देवों—जो वैदिक परंपरा में चिकित्सक माने जाते हैं—की उपासना से स्वास्थ्य प्राप्त किया।

उनके दोनों सूक्तों की चौदह-चौदह ऋचाएँ स्वास्थ्य-सुधार, शुभ जीवन, शुद्ध ज्ञान और ईश्वर-प्रार्थना पर आधारित हैं। घोषा प्रार्थना करती हैं कि अश्विन उन्हें ऐसे मार्गदर्शन दें जैसे पिता पुत्र को शिक्षा देता है, और किसी भी संभावित संकट से पहले ही उनकी रक्षा करें। इससे स्पष्ट होता है कि वे मानसिक दृढ़ता, स्वास्थ्य और विद्या—तीनों को सर्वोपरि मानती थी।

अदिति दाक्षायणी ऋषिका

अदिति दाक्षायणी का उल्लेख वैदिक साहित्य में अनेक स्थानों पर मिलता है। वे ऋग्वेद मण्डल 10, सूक्त 72 की द्रष्टा हैं। उनके पिता दक्ष होने के कारण उनका नाम 'दाक्षायणी' पड़ा। उनका सूक्त जगत् की उत्पत्ति, देवतत्त्व और सृष्टि-विज्ञान से संबंधित है। पहले मंत्र में वे विद्वानों को संबोधित करते हुए कहती हैं कि दिव्य

पदार्थों के जन्म की प्रक्रिया का वर्णन वाणी द्वारा किया जाता है, और सृष्टि के बनने के बाद उसकी कार्य-प्रणाली को व्यवहार में देखा जा सकता है।

ऋग्वेद में उनके द्वारा गृहस्थ जीवन और स्त्री-गरिमा से जुड़े विचार भी व्यक्त किए गए हैं। वे कहती हैं कि जैसे उत्तम घर में सोने वाली सुगंधित, विवाहित, सद्गुण सम्पन्न स्त्री को सम्मानपूर्वक स्थान दिया जाता है, वैसे ही प्रत्येक गृहस्थ को अपने परिवार में मर्यादा, पवित्रता और सौहार्द बनाए रखना चाहिए। उनकी ऋचाओं से यह स्पष्ट होता है कि अदिति दाक्षायणी वैदिक समाज में सृष्टि-तत्व, गृहस्थ-धर्म और स्त्री-गरिमा की प्रतिष्ठित प्रतिपादक थी।

स्यूमरश्मि भार्गवी

स्यूमरश्मि भार्गवी भृगुवंश की प्रतिष्ठित ऋषिका थी। उन्होंने ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 77 और 78 की दृष्टि की है। दोनों सूक्तों में आठ-आठ ऋचाएँ हैं, इसलिए उनके द्वारा दृष्ट मंत्रों की कुल संख्या सोलह होती है। इन ऋचाओं का मुख्य विषय प्राण-साधना, जीवन-शक्ति और मनोबल का विकास है। दोनों सूक्तों के देवता मरुतों को माना गया है, जो उत्साह, ऊर्जा और प्राणशक्ति के प्रतीक हैं। इससे प्रतीत होता है कि स्यूमरश्मि जीवन-ऊर्जा और आंतरिक सामर्थ्य को अत्यंत महत्वपूर्ण मानने वाली ऋषिका थी।

सूर्या सावित्री

सूर्या सावित्री ऋग्वेद मण्डल 10 के प्रसिद्ध विवाह सूक्त (सूक्त 85) की द्रष्टा हैं। इस सूक्त की 47 ऋचाएँ वैदिक विवाह-संस्कार का आधार मानी जाती हैं। इन मंत्रों में नारी के सम्मान, उसके परिवार में स्थान, पति-पत्नी के संबंध, गृहस्थ जीवन की मर्यादा और ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-दोनों आश्रमों में स्त्री के कर्तव्यों का विस्तार से चित्रण है। प्रारंभिक ऋचाएँ शरीर, मन और चरित्र को सुदृढ़ बनाने की शिक्षा देती हैं, जबकि बाद की ऋचाएँ वैवाहिक जीवन में संतुलन, प्रेम और सामाजिक गरिमा का मार्ग दिखाती हैं। इस सूक्त में स्त्री का उच्च आदर्श रूप स्पष्ट दिखाई देता है।

इन्द्राणी

इन्द्राणी, ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 86 की विशिष्ट ऋषिका हैं। इस सूक्त में 23 ऋचाएँ हैं और इसमें ब्रह्म, जीव तथा प्रकृति तीनों का अत्यंत सुंदर दार्शनिक वर्णन मिलता है। यहाँ 'वृषाकपि' जीवात्मा, 'इन्द्र' परमात्मा और 'इन्द्राणी' प्रकृति का प्रतीक हैं। इसलिए इन्द्राणी को प्रकृति के दार्शनिक स्वरूप को साक्षात् देखने वाली ऋषिका माना गया है। यह सूक्त प्रकृति और पुरुष के सामंजस्य, सृष्टि के नियमों और जीव के परमात्मा से संबंध का सूक्ष्म विवेचन करता है।

रेणु ऋषिका

रेणु ऋषिका, ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 89 की द्रष्टा हैं। इस सूक्त में अठारह मंत्र हैं। अधिकांश मंत्रों में परमेश्वर के दैवी गुण, उसकी सर्वज्ञता, सर्वशक्ति और करुणा का स्तुतिपूर्ण वर्णन है। पाँचवें और छठे मंत्र में क्रमशः वर्षा, वनस्पति और प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण है। सातवें मंत्र में ईश्वर को जगत् का सर्वश्रेष्ठ, सर्वाधिक महान और अद्वितीय कर्ता बताया गया है। रेणु द्वारा दृष्ट मंत्र प्रकृति-भक्ति, ईश्वर-प्रार्थना और विश्व-व्यवस्था के ज्ञान से भरे हुए हैं।

उर्वशी ऋषिका

उर्वशी ऋषिका ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 95 की कई ऋचाओं की दृष्टा हैं। उनकी देखी हुई ऋचाएँ 2, 4, 5, 7, 11, 13, 15, 16 और 18 हैं, जबकि पुरूरवा द्वारा दृष्ट मंत्र 1, 3, 6, 8, 9, 10, 12 और 14 हैं। यह सूक्त वैदिक काल का अत्यंत महत्वपूर्ण संवाद सूक्त माना जाता है। विशेष बात यह है कि उर्वशी न केवल इन मंत्रों की दृष्टा हैं, बल्कि वे उन्हीं ऋचाओं की वक्ता भी हैं। इस संवाद में उर्वशी का व्यक्तित्व अत्यंत स्वतंत्र, आत्मसम्मान से पूर्ण और विचारों में स्पष्ट दिखाई देता है। वह प्रेम, संबन्ध, नारी-स्वाधीनता और मानसिक दृढ़ता के विषयों पर प्रखर रूप से अपने विचार प्रकट करती है। इस सूक्त से उर्वशी का अत्यंत भावनाशील, ज्ञानसम्पन्न और स्वाभिमानी स्वरूप सामने आता है।

सरमा देवशुनी

सरमा देवशुनी ऋषिका ऋग्वेद के सूक्त 108 की कई ऋचाओं की दृष्टा हैं, जहाँ उनका पणियों के साथ संवाद मिलता है। इस संवाद में सरमा देवशुनी सत्य, धर्म और न्याय का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि पणि अधर्म और छल का प्रतीक बनते हैं। पूरा सूक्त सत्य के पक्ष की अंतिम विजय का रूपक बनकर सामने आता है।

जुहू ब्रह्मजाया ऋषिका

जुहू ब्रह्मजाया ऋषिका सूक्त 109 की दृष्टा हैं। उनकी ऋचाओं में ईश्वर की महिमा, स्वाध्याय, वेदाध्ययन और ब्रह्मचर्य-आश्रम के आदर्शों का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। वे आध्यात्मिक साधना, ज्ञान और प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण को जीवन की सर्वोच्च साधना बताती हैं।

वागाम्भृणी ऋषिका

वागाम्भृणी ऋषिका सूक्त 125 की दृष्टा और देवता दोनों हैं। उनकी वाणी में राष्ट्र-सभा, संसद, राज्य-व्यवस्था और सामूहिक निर्णय-शक्ति का अत्यंत तेजस्वी

चित्र सामने आता है। उनकी ऋचाएँ प्रकट करती हैं कि वैदिक समाज में ज्ञानवती स्त्रियों को भी राज्य और सभा के प्रमुख विषयों पर विचार प्रकट करने का अधिकार था।

सुकीर्ति काक्षीवती ऋषिका

सुकीर्ति काक्षीवती ऋषिका सूक्त 131 की दृष्टा हैं और प्राण–साधना, मनोबल तथा अध्यात्म की शुचिता का संदेश देती हैं। वे परमात्मा से प्रार्थना करती हैं कि मनुष्य काम, क्रोध, लोभ और मोह जैसे आंतरिक शत्रुओं से बचकर शांति, संयम और शक्ति प्राप्त करे। उनकी ऋचाएँ वैदिक आध्यात्मिकता के अत्यंत व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करती हैं।

सुवेदा शैरीषि ऋषिका

सुवेदा शैरीषि ऋषिका सूक्त 147 की दृष्टा हैं, जहाँ इन्द्र देवता के माध्यम से वे मनुष्य को सांसारिक वासनाओं से ऊपर उठकर ज्ञान, शारीरिक शक्ति और योग्य धनार्जन का मार्ग दिखाती हैं। उनकी ऋचाएँ बताती हैं कि जीवन में संयम, परिश्रम और ईश्वर–उपासना ही स्थायी उन्नति का आधार हैं।

श्रद्धा कामायनी ऋषिका

श्रद्धा कामायनी ऋषिका, ऋषि कर्दम की पुत्री और कपिल मुनि की बहन, श्रद्धा सूक्त की दृष्टा हैं। वे अपनी ऋचाओं में बताती हैं कि श्रद्धा ही ज्ञान, तप, कर्म और साधना को सफल बनाती है। मन, वचन और कर्म में दृढ़ आस्था ही मनुष्य को आध्यात्मिक रूप से ऊँचा उठाती है।

इन्द्रमाता देवजामय ऋषिका

इन्द्रमाता देवजामय ऋषिका सूक्त 153 की दृष्टा हैं। उनकी प्रारम्भिक ऋचाएँ एक आदर्श राजा के गुणों का वर्णन करती हैं—धैर्य, न्याय, पराक्रम और जनता के हित में सतत् कार्य। आगे की ऋचाएँ वायु और सूर्य की शक्तियों का उल्लेख करती हैं, जिन्हें वे जगत् में जीवन और ऊर्जा के आधार के रूप में दर्शाती हैं।

शची पौलोमी ऋषिका

शची पौलोमी ऋषिका, इन्द्र की पत्नी, सूक्त 159 की दृष्टा हैं। उनकी ऋचाएँ एक रानी के हृदय की प्रसन्नता दिखाती हैं, जब उसका पति राष्ट्राध्यक्ष बनता है। वे राजधर्म, दाम्पत्य सामंजस्य और राष्ट्र के प्रति निष्ठा का सुंदर चित्रण करती हैं, जिससे वैदिक समाज में स्त्री की सम्मानित, सहभागी और प्रेरक भूमिका का पता चलता है।

इन्द्राग्नी ऋषिका

यजुर्वेद अध्याय 13 (मंत्र 22–25) की दृष्टा इन्द्राग्नी ऋषिका ने विज्ञान, सृष्टि–

रचना तथा पति-पत्नी के आदर्श आचरण पर विचार किया है। उनकी ऋचाएँ दर्शाती हैं कि संगठित परिवार, ज्ञान-विज्ञान और सृष्टि-नियमों की समझ मनुष्य-जीवन को श्रेष्ठ बनाती है।

रभ्याक्षी ऋषिका

यजुर्वेद अध्याय 26 के मंत्र 4-5 की दृष्टा रभ्याक्षी विद्वान वैद्य के गुणों का वर्णन करती हैं। वे बताती हैं कि वैद्य अपनी बुद्धि से अनेक कार्य करता है, औषधियों का ज्ञान प्राप्त कर समाज का कल्याण करता है, और उसका ज्ञान वाणी उसे ऐश्वर्य दिलाता है। स्वास्थ्य-सेवा को वेदों में अत्यंत सम्मान मिला है—इसका सुन्दर चित्रण यहाँ मिलता है।

सरस्वती ऋषिका

यजुर्वेद अध्याय 28 के मंत्र 24-26 की दृष्टा सरस्वती विद्या, तेज, और वाक्-शक्ति का प्रतिपादन करती हैं। तीनों मंत्रों में ज्ञान की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और वाणी की प्रभावशीलता को मनुष्य के उन्नति-पथ का आधार बताया गया है। वे वैदिक परंपरा में ज्ञान की मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

सुनीति ऋषिका

यजुर्वेद अध्याय 33 मंत्र 21 की दृष्टा सुनीति वैदिक राजनीति का सिद्धांत बताती हैं। वे कहती हैं कि राज्य-व्यवस्था न्याय, सत्कार्य, विवेक और सामाजिक संतुलन पर आधारित होनी चाहिए। आदर्श शासन का मूल—धर्मसम्मत नीति और प्रजा का हित—इनके मंत्र का प्रमुख भाव है।

रात्रि भारद्वाजी ऋषिका

रात्रि भारद्वाजी महर्षि भारद्वाज की विदुषी पुत्री थी। उनका पालन-पोषण एक ऐसे वातावरण में हुआ जहाँ वेद-अध्ययन, यज्ञ-विज्ञान और मंत्र-दर्शन का निरन्तर अभ्यास होता था। महर्षि भारद्वाज स्वयं वेदों के प्रमुख ऋषियों में गिने जाते हैं—वे ऋग्वेद मण्डल 7 के अधिकांश मंत्रों के दृष्टा हैं और कुल 518 मंत्रों पर उनका कार्य मिलता है। ऐसे महान् वेदज्ञ पिता की सतत संगति में रात्रि का ऋषिका बन जाना स्वाभाविक था।

रात्रि भारद्वाजी ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 127 की दृष्टा हैं। इस सूक्त में रात्रि (निशा) के सौन्दर्य, उसके शांत वातावरण, उसकी मर्यादा और उसकी संरक्षण-शक्ति का अत्यन्त काव्यमय वर्णन है। वे रात्रि को एक ऐसी देवशक्ति के रूप में देखती हैं जो अंधकार में जीवों की रक्षा करती, संसार को विश्राम देती और नए दिन के लिए शक्ति संचित करने का अवसर प्रदान करती है। सूक्त का भाव सौन्दर्य, शांति और

प्रकृति के गहन अनुभवों से भरा हुआ है।

वेदों में लगभग 34 ऋषिकाओं का उल्लेख है, जिन्होंने पुरुष ऋषियों की ही भाँति अनेक सूक्तों का दर्शन किया और मानव-जीवन की समस्याओं पर मार्गदर्शन दिया। सर्वाधिक कार्य ऋग्वेद में हुआ है—जहाँ रोमेशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, यमी, घोषा, उर्वशी, वागाम्भृणी आदि ने शिक्षा, न्याय, स्वास्थ्य, उपासना, शासन, ज्ञान-प्रसार, स्त्री-पुरुष समानता और समाज-व्यवस्था जैसे विषयों पर स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

इन ऋषिकाओं का मत था कि वेद सभी को समान रूप से शिक्षा का अधिकार देता है, स्त्री चाहे तो विद्वान् बनकर शासन-व्यवस्था को भी दिशा दे सकती है। अनेक ऋषिकाओं ने स्वास्थ्य-सुरक्षा, औषध-ज्ञान, शुभ कर्म, न्यायप्रियता, परिवार-नीति तथा सभागत कार्यप्रणाली तक का वर्णन किया। यजुर्वेद और सामवेद में भी कई ऋषिकाओं द्वारा दाम्पत्य-संबंध, दान, ऋतु-अनुकूल जीवन, औषध-प्रयोग आदि विषयों पर निर्देश मिलते हैं।

सारतः, वैदिक परम्परा में नारी शिक्षा इतनी विकसित थी कि स्त्रियाँ भी ब्रह्मवादिनी बनकर वेदमंत्रों का दर्शन करने में सक्षम थी, और समाज के लिए मार्गदर्शक विचार देती थी।

❖❖❖